कर्म करें लेकिन उनके प्रभाव से मुक्त रहकर

जब तक इस शरीर में आत्मा जीव-आत्मा के रूप में है, तब तक कर्म तो कुछ न कुछ, सूक्ष्म व स्थूल होगा ही। बिना कर्म के रह नहीं सकते। अब कर्म करते भी न्यारा रहना, उसके प्रभाव से अलिप्त रहना, ये कैसे संभव है! कर्म भी करना और उसके प्रभाव से मुक्त भी रहना, इसका तात्पर्य क्या है, ये हमें किसी ने न सिखाया न समझाया। परिणामस्वरूप हमारे कर्म होते गए और हम किसी न किसी व्यक्ति, वस्तु, पदार्थ व वातावरण के प्रभाव में आते गये, हम भारी होते गये, बोझिल होते गये। क्योंकि हमें ये पता ही नहीं कि इसके प्रभाव से मुक्त कैसे रहा जा सकता है। कर्म भी करें और मुक्त भी रहें? हमें इस प्रश्न का कहीं से उत्तर नहीं मिला। हमें परमात्मा ने बताया कि कर्म करो लेकिन बंधन न हो। बंधन बोझिल बनाता, भले सेवा अर्थ सम्बंध हो लेकिन बंधन न हो। इसको हम थोड़ा समझते हैं। एक साधु राजा जनक के पास आया और उनसे कहा कि आप कारोबार करते भी विदेही कैसे रहते हैं? राजा जनक ने उस साधु को एक जलता हुआ दीपक दिया जो घृत से भरा हुआ था और कहा कि आप इस दीपक को लेकर पूरे राजमहल का भ्रमण कर अवलोकन करके आइये, कोना-कोना देखकर आइये और फिर मुझे बताइये कि आपने क्या-क्या देखा। लेकिन साथ ही इस बात का ध्यान रहे कि कहीं दीपक बुझ न जाये और घृत गिर न जाये। साधु उस दीपक को लेकर राजमहल देखने निकला। वो जब वापस आया राजा जनक के पास, तो राजा ने पूछा, आपने महल देखा? तो साधु ने कहा, कहाँ! मैंने तो कुछ नहीं देखा, मेरा ध्यान तो इस दीपक पर ही रहा कि कहीं ये बुझ न जाये और घृत गिर न जाये। राजा जनक ने कहा, उत्तर मिल गया ना! ऐसे ही हम शरीर में रहें लेकिन कोई भी बाह्य आकर्षण, वस्तु, पदार्थ, व्यक्ति से मुक्त रहें, इसी को कहते हैं विदेही अवस्था।

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर

परमात्मा ने हमें बताया और हमें कहा, देह में रहते भी देहभान के बंधन से मुक्त रहना है। रहना तो देह में है, लेकिन भान से मुक्त, कॉन्शियस से मुक्त रहना है। जीवन जीना है लेकिन उसे बंधन के बोझ से मुक्त रखना, सम्बंध में रहना। सम्बंध हल्का करता है, बंधन वश करता है। सम्बंध से शुद्ध स्नेह का सहयोग मिलता है। क्योंकि वहां आत्मा का आत्मा के रूप से सम्बंध है, न कि देह से सम्बंधित सम्बंध। अगर देह के वश होते हैं, परवश होते हैं तो वो बंधन मुक्त नहीं रह सकते। यह हमें चेक करना है, कोई भी कर्म करें, वहां हमें ध्यान रखना है कि हम देह के बंधन में तो नहीं!

परमात्मा ने हमें अलौकिक ब्राह्मण जन्म दिया। ब्राह्मण माना ही जीवनमुक्त। कर्म तो करेंगे लेकिन बंधन के बोझ से मुक्त रहेंगे। कर्मेन्द्रियों का आधार लेकर करावनहार की स्मृति से कर्मेन्द्रियों द्वारा होने वाले कर्म से मुक्त रहेंगे। तो कर्मेन्द्रियां हमें बंधन में नहीं बांधेगी लेकिन हम ट्रस्टीपन के भाव से उससे कार्य करेंगे।

हम परमात्मा की शिक्षाओं से कर्मबंधन मुक्त बनने की प्रैक्टिस करने वाले हैं क्योंकि हमें अभी बंधन में नहीं बंधना है। हमें अभी वापस जाना है। उसके लिए परमात्मा ने हमें एक बहुत सुंदर युक्ति बताई कि सर्व सम्बंध मुझ एक परमात्मा से जोड़ो। उसको अलग शब्द में भी बाबा ने कहा कि 'मैं' और 'मेरा' एक शिव बाबा। क्योंकि मेरे-मेरे के बंधन बहुत हैं यहां। मेरा शरीर, मेरा कारोबार, मेरी वस्तु, ये मेरा-मेरा के बंधन से मुक्त होने के लिए मेरा तो एक शिव बाबा। सर्व अनेक मेरे-मेरे से छूटकर एक के साथ जुड़ना इज़ी है ना। बस यही ध्यान हर क्षण रखने की प्रैक्टिस करें, अटेंशन रखें तो हमें सहज ही बंधन मुक्त रहने की आदत पक्की होती जाएगी और हम बोझ से मुक्त रह सकेंगे। ऐसा नहीं कि मुक्ति और जीवनमुक्ति की अवस्था सतयुग में होगी। नहीं, यहीं ब्राह्मण जीवन में ये अनुभव करना है, अभ्यास करना है और अपने को हल्का रखना है।

अपने से ये सवाल पूछें कि बाबा ने मुझे मंत्र दिया है स्मृतिलब्धः, तो मैं हूँ?

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

हमारा बाबा कितना निरहंकारी है, बच्चों को कहता है बच्चे मैं तुम्हारा ओबीडिएन्ट सर्वेन्ट हूँ। जब बाबा ही ओबीडिएन्ट है तो हम अपने से पूछें कि हम भी उनके समान निरहंकारी और निर्मानचित्त रहते हैं? जब ऊंचे ते ऊंचा बाप, इतनी ऊंची अथॉरिटी कहता है मैं तुम्हारा सर्वेन्ट हूँ, तो हमें कितना निरहंकारी होना चाहिए! जब अपने को सेवाधारी समझते तो स्वतः निरहंकारीपन की स्टेज आ जाती है।

अपने को निमित्त समझने से करन करावनहार बाप स्वतः याद आता है। जब सेवाधारी कहते तो हम किस सेवा के निमित्त हैं। जैसे हॉस्पिटल में नर्सेज, अपनी नर्स की सेवा समझ ओबीडिएन्ट हो सेवा करती हैं, वैसे हम किस चीज़ की सेवाधारी हैं। अगर सोचते हम दूसरे को संदेश देने वाले सेवाधारी हैं, ऐसा समझने वाले दूसरे को संदेश पहुंचा देते लेकिन स्वयं को भूल जाते। हम स्व के भी संदेशी हैं, स्व के भी सेवाधारी हैं, यह भूल सिर्फ दूसरों के सन्देशी बन जाते हैं। बाबा ने कहा तुम मेरे मददगार हो, सृष्टि को पावन बनाने में। तो जो दूसरे को पावन बनायेगा वह खुद भी पावन रहेगा या खुद पतित दूसरों को पावन बनने का संदेश देगा?

ब्रह्माकुमार-कुमारी माना पावन बाप के पावन बच्चे, पावन बनाने वाले। तो खुद ही खुद से पूछो - मेरा मन्सा-वाचा-कर्मणा पावन हैं? ऐसे नहीं कर्मणा में तो हैं लेकिन मन्सा में नहीं... बाबा ने पूरा ही छोड़ने को कहा है, एक को नहीं। ऐसे नहीं लोभ छोड़ो, मोह भले रखो। अन्त का मंत्र है स्मृतिलब्धः नष्टोमोहा। जब तक ये मन्त्र प्रैक्टिकल में नहीं तब तक दूसरों की क्या सेवा करेंगे! हरेक पहले यह सवाल पूछें कि बाबा ने मुझे मंत्र दिया है स्मृतिलब्धः, तो मैं हूँ? मेरी यह स्थिति बाबा के डायरेक्शन के अनुसार है या मैं इस स्थिति से बहुत दूर हूँ? स्मृति माना बाबा याद आ गया। नष्टोमोहा माना विजयन्ती। मैं अगर सबको पावन बनाने वाली बाप समान सर्वेन्ट हूँ तो मैं नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप हूँ या कहीं बुद्धि जाती है? कई कहते हैं मेरी वृत्ति जाती है। मैं पूछती जबसे ब्रह्माकुमार-कुमारी बने तो क्या उस दिन से यह संकल्प भी उठा कि मैं जाकर शराब टेस्ट करूँ। उसमें वृत्ति क्यों नहीं गयी? कभी ऐसी वृत्ति गई कि मैं मलेच्छों का खाना खाकर देखूं कि इसका क्या टेस्ट है? कोई की भी वृत्ति में यह स्वप्न तक भी आया? क्या ये अन्दर में आता कि होटल में जाकर 12 बजे तक डांस तो करके देखें। क्यों नहीं गये? संग में आकर किसी ने डांस आदि जाकर किया हो तो हाथ उठाओ। जब यह इच्छायें नहीं उठती फिर ये इच्छा क्यों उठती कि फलानी की देह में मेरी बुद्धि जाती! मुझे माया के तूफान आते! इसमें क्यों कहते मेरी वृत्ति जाती है? जब वह वृत्ति नहीं उठती तो यह क्यों उठती है?

> अन्त का मंत्र है स्मृतिलब्धः नष्टोमोहा। जब तक ये मन्त्र प्रैक्टिकल में नहीं तब तक दूसरों की क्या सेवा करेंगे! हरेक पहले यह सवाल पूछे कि बाबा ने मुझे मंत्र दिया है स्मृतिलब्धः, तो मैं हूँ?

माया के कोई भी तूफान तब आते हैं जब अपने को सर्वेन्ट नहीं समझते। अगर हम विश्व को पावन बनाने के निमित्त सर्वेन्ट हैं तो क्या मेरी वृत्ति जा सकती है! अगर जाती है तो मैं ओबीडिएन्ट हुई? जब बाबा ने कह दिया कि तुम बच्चे इस दुनिया से मर गये, मैं महाकाल आया हूँ तुमको घर ले जाने, धुन है घर जाने की, यही धुन रहे तो वृत्ति जा नहीं सकती।

हर्षितमुख रहना है पुरूषार्थ की सफलता...

राजयोगिनी दादी जानकी जी

शक्तियों की महिमा अपनी है, महावीरों की महिमा भी कम नहीं है। पाँच पाण्डवों में भी हरेक की खूबी अपनी है। पाण्डवों के पाँचों ही गुण हरेक में आ जायें। भीम भण्डारी सम्भालता है। अर्जुन ज्ञान सुनते-सुनते नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा तक लाने की धुन लगाके बैठा है। नकुल कॉपी करने में होशियार है, सहदेव सदा सहयोगी है। सतधर्म और राज्य के हरेक गुण युद्धिष्ठिर के साथ-साथ हर एक पाण्डव में हैं और पाण्डवपति साथ है। शिवबाबा की शक्ति साथ न होती तो कदम आगे न बढ़ा सकते। कदम-कदम बाबा को फॉलो करते। हमारे सामने तो दिन-रात, स्वप्न में चाहे संकल्प में बाबा के चरित्र और बाबा के बोल ही हैं।

पुरूषार्थ के बगैर एक मिनट भी हमारा न जाये, इसमें न सुस्ती है, न बहाना है। पुरूषार्थ करने का टाइम नहीं है यह शब्द हम नहीं कह सकते। मैं बिजी हूँ, यह सरकमस्टान्स है। अक्ल नहीं है। याद और सेवा दो ही हमारे अन्दर हैं। याद भी हमारी ऐसी हो जो बाबा भी मेरे को याद करे, तब कहेंगे मेरी याद ठीक है। तो चेक करते रहो कि बाबा को मेरी याद आती है? भाग्यविधाता के हाथ में हाथ दिया है तो उसने भी साथ दिया है। और फिर गैरन्टी है जो बाबा ने मुझ आत्मा के प्रति महावाक्य उच्चारे हैं, वो काम कर रहे हैं। और किसके वाक्य अन्दर जा नहीं सकते। अगर और किसी के बोल हमारे अन्दर गये तो बाबा के बोल काम नहीं करते हैं, बड़ी खबरदारी की बात है। मैं किसी को समझाऊं, मैंने देखा यह भी व्यर्थ है। उनसे ज़्यादा शुद्ध संकल्प, श्रेष्ठ भावना काम कर रही है। अगर चिंतन में लाते तो जो बोलते हैं वो असर नहीं करता है। उसके बजाय पहले हमारा व्यर्थ समाप्त हो। जितना समय मैंने किसी को समझाने का चिंतन किया, उतना समय मुझे उसे समझाने का चांस ही नहीं मिलता। अगर मैं उसको समझाऊंगी तो वो कहेगी कि तुम कौन हो! मैं जानती नहीं हूँ क्या, तुमको सही बात का पता नहीं है! तो क्या फायदा हुआ। उसके बजाय श्रेष्ठ संकल्प, समर्थ संकल्प का साथ देना, साथी बनाना, इससे आज नहीं तो कल चेंज होगा। इसमें धीरज की बात है, समय लगेगा पर संकल्प की क्वालिटी, श्रेष्ठ भावना, शुद्ध भावना को अगर मैंने चेंज किया तो जो बात सामने है उससे मैं सहज पार नहीं हो पाऊंगी। मेरे को पार होना है। ड्रामा अनुसार बात तो पार हो गयी लेकिन चिन्तन में अभी भी है तो मेरी स्थिति कैसी है। अगर मेरी स्थिति ऐसी रही तो उसको फायदा नहीं होगा। अगर श्रेष्ठ भावना, शुद्ध भावना होगी तो फायदा होगा। थोड़ा भी इफेक्ट में आई तो मेरा डिफेक्ट हो जायेगा, इसमें स्वयं को सम्भालना है।

हर्षितमुख रहना पुरूषार्थ की सफलता है। हर्षितमुख तब होगा जब मैं आत्मा शान्त हूँ, मेरा स्वधर्म शान्त है, मेरा बाबा प्यार का सागर है। जैसे बाबा मुस्कुराते सब काम करता है। मुस्कुराते-मुस्कुराते बाबा समझ भी देता है तो शक्ति भी देता है। अगर इतना बाबा से प्यार है, तो कहता है मैं बैठा हूँ। वो शक्ति देता है मुस्कुराने की।

हम स्वराज्य अधिकारी हैं तो यह देह अपनी तरफ आकर्षित नहीं करेगी

अगर बाबा हमारे मन में सदा याद रहे, दिल में समाया हुआ रहे तो हम भी बाबा की याद में बाबा के समान बन जायेंगे। बस, बाबा की याद भूलें नहीं क्योंकि हमारा कहना है कि बाबा और हम कम्बाइंड हैं। बापदादा हमारे साथ कम्बाइंड है तो अलग कैसे हो सकता है और बाबा याद है, तो ऑटोमेटिकली हमें बाबा समान अशरीरी बनने की स्मृति आती है। जितना बाबा से जिगरी दिल का प्यार होगा उतना बाबा नहीं भूलेगा। जब बाबा की याद होगी तो आत्मिक स्वरूप की स्मृति भी ज़रूर होगी और आत्मिक स्वरूप की स्मृति है तो अशरीरी स्थिति की भी अनुभूति ज़रूरी है। तो सारे दिन में हम जब अशरीरी बनने चाहें तब बन सकते हैं? मन, बुद्धि, संस्कार यह तीनों ही आत्मा की सूक्ष्म शक्तियां हैं लेकिन हैं मेरी, मैं इसका मालिक हूँ। तो सारे दिन में बीच-बीच में चेक करना चाहिए कि सचमुच मैं मालिक होकर मन, बुद्धि, संस्कार को चलाने वाली हूँ, इस स्थिति में स्थित रहती हूँ? ऐसे ही मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ, यह भी मंत्र मुआफिक नहीं जपो, इसका मनन करो।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

हम सिर्फ कर्मकर्ता नहीं हैं, कर्मयोगी हैं। कर्म और योग हमारा साथ-साथ है। कर्मयोगी माना आत्मा करावनहार हो करके कर्मेन्द्रियों से कर्म करा रही है। तो अगर हम यह मालिकपन की स्मृति रखते हैं कि मैं आत्मा मालिक हूँ, मालिक होकर कोई भी कर्म करते हैं तो हमारे में कन्ट्रोलिंग पॉवर आती है। मैं आत्मा हूँ लेकिन कराने वाली हूँ कर्म कर्ता हूँ, इस स्मृति की आदत अगर होगी तो जब चाहे अशरीरी होना इज़ी लगेगा क्योंकि राजा माना कन्ट्रोलिंग पॉवर और रूलिंग पॉवर। जैसे ऑर्डर से चलावे, अगर हमारी स्मृति में रहेगा कि हम स्वराज्य अधिकारी हैं तो यह देह अपनी तरफ आकर्षित नहीं करेगी। अशरीरी माना शरीर भूल जावे नहीं लेकिन शरीर का मालिक होके शरीर से कर्म करायें। इसके लिए सारे दिन में बीच-बीच में समय निकाल करके अपने आपको चेक करते ड्रिल करते जाओ, तो चेक और चेंज का लिंक जुटा रहने से आपकी भी लगातार कर्मयोगी की नेचर बन जायेगी। कोई भी बात अगर बार-बार की जाती है तो उसके लिए कहते हैं कि यह क्या बड़ी बात है!

ऐसे ही अगर हम बार-बार चेक करके उस कमी की जगह बाबा की शक्ति और याद से चेंज करते रहेंगे तो फिर कभी नहीं कहेंगे कि मुझे तो याद भूल जाती है, मेरा तो योग ही नहीं लगता, अशरीरी नहीं हो पाते हैं। परन्तु इसी बात को माया बार-बार भूलवाके भूलें कराती रहती है। यह बात सुनें नहीं सुनें, यह करें या नहीं करें, वो तो हमारे हाथ में है। बहुतकाल के संस्कार बाधा डालते रहते हैं, जिसके कारण निरंतर योग में अन्तर आ जाता है। और जब तक निरंतर अभ्यास नहीं करेंगे तब तक आप जिस समय चाहें एक सेकण्ड में अशरीरी बन जायें, वो नहीं हो सकेगा। अच्छा या बुरा संकल्प चलाने की आदत होगी तो आप अशरीरी बनने की कोशिश करेंगे, वो संकल्प की आदत आपको संकल्प में ले आयेगी, इसीलिए बाबा समय प्रमाण यह डायरेक्शन बार-बार दे रहा है कि जिस समय फिक्स करते हो, उतना समय उस कार्य को पूरा एक्यूरेट करो।